दाईं सूँड़ के गणेशजी

जयंत विष्णु नारलीकर

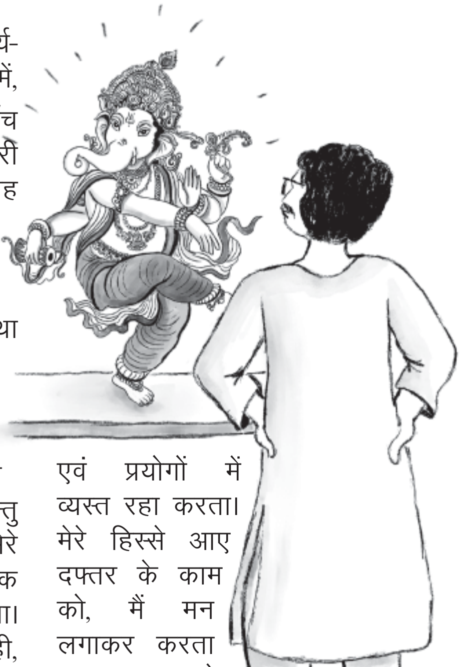

सँजू द्वारा बताया गया आश्चर्यजनक किस्सा उसी के शब्दों में,

"तुम्हें शायद याद हो कि पाँच साल पहले, मैंने एक सरकारी नौकरी के लिए आवेदन दिया था। उस जगह के लिए किसी वैज्ञानिक एवं तकनीशियन की आवश्यकता थी। काम गुप्त किस्म का था। फण्डामेंटल फिज़िक्स तथा इलेक्ट्रॉनिक्स, दोनों विषयों में मैंने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। अतः वहाँ मेरी नियुक्ति आसानी-से हो गई।

"महत्वपूर्ण काम मिलने की वजह से मैं बहुत खुश था परन्तु जल्दी ही मेरी खुशी धुल गई। मेरे काम का स्वरूप डेस्कवर्क अधिक और प्रयोगशाला का काम कम था। इसके साथ लाल फीताशाही, सीनियर लोगों की हुकूमत, उनकी मर्ज़ी के मुताबिक चलना, नई सूझ-बूझ के प्रति निरुत्साह, सहकर्मियों के बीच ईर्ष्या-डाह आदि सब कुछ वहाँ भी मौजूद था। इसीलिए मैंने औरों से सम्पर्क कम ही रखा। काम तक ही सब से सम्बन्ध सीमित रखे थे मैंने। वहाँ मेरे अधिकांश सहकर्मी चाय-पानी और गपशप में ही अधिक समय बिताया करते परन्तु मैं अपने अध्ययन एवं प्रयोगों में व्यस्त रहा करता। मेरे हिस्से आए दफ्तर के काम को, मैं मन लगाकर करता था, अतः मुझसे किसी को कोई शिकायत नहीं थी। मैं अपना समय किस प्रकार बिताता हूँ, इस ओर किसी का ध्यान नहीं था।

"गुरुत्वाकर्षण तथा मूलभूत कणों के विषय में मुझे अनुसन्धान करना था। पिछले कई वर्षों से एक अजीबोगरीब कल्पना मेरे मन में आती रही, उसे मूर्त रूप देने का मैंने निश्चय कर लिया था। उस प्रयोग के

लिए लगने वाले उपकरण हमारी प्रयोगशाला में उपलब्ध थे। इससे पहले कि मैं अपने प्रयोग के बारे में कुछ कहूँ, मैं अपनी मूल परिकल्पना को विस्तार से बताता हूँ।

"आइन्स्टाइन के गुरुत्वाकर्षण के नियम के अनुसार, अन्तरिक्ष एवं काल के गुण, उस में निहित वस्तुओं पर निर्भर करते हैं। यदि किसी भाग में कोई भी वस्तु उपस्थित नहीं है तब अन्तरिक्ष एवं काल की ज्यामिति (रेखागणित), युक्लिड की ज्यामिति होती है जिसे हम स्कूल में पढ़ते हैं। इसके ठीक विपरीत, यदि उस अवकाश में किसी विशाल द्रव्यमान अथवा ऊर्जा की वस्तु को रख दिया जाए तब उस भाग की ज्यामिति बदल जाती है। उस स्थान में सरल रेखाओं की दिशा परिवर्तित हो जाती है। हम कहते हैं कि प्रकाश सरल रेखा में गमन करता है परन्तु किसी भीमकाय वस्तु के निकट से गुज़रते समय प्रकाश की दिशा बदल जाती है। खगोलशास्त्रीय विधियों ने इस प्रकार के बदलाव को स्पष्ट कर दिया है जिसे वैज्ञानिक कसौटी पर परखा गया है। आइन्स्टाइन का सिद्धान्त है कि 'वस्तुजनित गुरुत्वाकर्षण की वजह से अवकाशकाल का वक्रीकरण होता है', इसी सिद्धान्त पर सारे परिणामों को जाँचा-परखा गया है।

"मैं तुम्हें वक्रगामी अन्तरिक्ष-काल और उसकी अपनी ज्यामिति आदि के बारे में भाषण देकर परेशान करना नहीं चाहता। परन्तु मेरी अपनी कल्पना को स्पष्ट करने से पहले यह प्रस्तावना आवश्यक थी क्योंकि इसके आगे मैं, अन्तरिक्ष काल में बल पड़ने (यानी ऐण्ठन) की कल्पना को स्पष्ट करने वाला हूँ।

"तुमने 'मोबियस की पट्टी' का नाम सुना होगा। पतलून पहनने पर हम जो बेल्ट पहनते हैं, उसे यदि समतल मेज़ पर फैलाकर रखा जाए तब उसके दोनों पृष्ठभाग (बेल्ट का निचला एवं ऊपरी, दो पृष्ठभाग होते हैं) समतल होते हैं। युक्लिड की ज्यामिति उन पर लागू होती है। जब उस बेल्ट को कमर पर बाँधा जाता है तब वह वक्र हो जाता है और उसके दोनों पृष्ठों पर 'अयुक्लिडीय' ज्यामिति के नियम लागू हो जाते हैं। इस स्थिति में भी, उसके दो पृष्ठभाग तो बने ही रहते हैं। अब यदि हम बेल्ट को ऐण्ठन यानी बल देकर कमर पर बाँधते हैं तब इस बेल्ट का एक ही पृष्ठभाग बन जाता है। इसे ही 'मोबियस की पट्टी' कहते हैं।

"मानो उस पट्टी पर रेंगने वाले जीव रहते हैं जिनकी लम्बाई-चौड़ाई है पर उनमें ऊँचाई नहीं है। मानो इस प्रकार का एक मनुष्याकृति जीव... जिसका सिर्फ बायाँ हाथ (यानी भुजा) है, वह इस कमर पर बाँधी हुई बेल्ट जैसी पट्टी पर रहता है। (याद रहे कि हम चपटे मनुष्य की संकल्पना कर रहे हैं।) अब यदि वह आदमी

उस पट्टी पर कितनी ही बार गोल-गोल घूम ले, वह बाएँ हाथ वाला ही आदमी रहेगा। परन्तु यदि, वह मोबियस पट्टी पर (यानी घुमाव खाए बेल्ट पर) एक पूरी परिक्रमा कर लेता है तब वह दाहिने हाथ वाला आदमी बन जाएगा। यदि तुम्हें यकीन नहीं तो कागज़ की पट्टी की मोबियस पट्टी बनाकर, खुद जाँच लो। देखो यह चित्रः

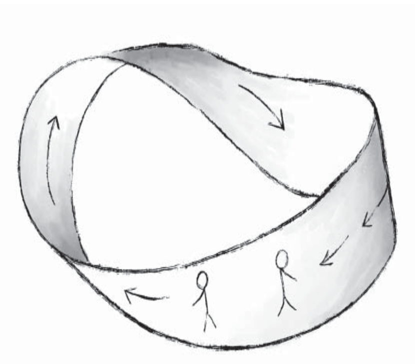

"इस पर रेंगते हुए उस चपटे जीव को जिस चमत्कार का अनुभव होता है, वह बात हमें चमत्कार नहीं लगती, क्योंकि हम उस पट्टी को तीन आयामों, यानी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई में देखते हैं। उस पट्टी में स्थित बल

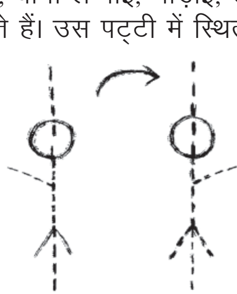

यानी घुमाव की वजह से, वह चपटा आदमी, उसकी आपाद मस्तक रेखा (उसके सिर से पैरों तक की रेखा) के गिर्द आधा घूम जाता है। और इसी वजह से, उसका बायाँ हाथ दाहिनी ओर पलट जाता है।

"यदि ऐसी ऐण्ठन हमारे तीन आयामों के अवकाश में पड़ जाए, तब? हम जैसों को, यानी जिनकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई है, वह चमत्कार ही दिखाई देगा। एक खास प्रकार के घुमाव वाले अवकाश में, एक चक्कर लगाने पर, किसी भी वस्तु का उसके प्रतिबिम्ब में रूपान्तर हो जाएगा। याद रहे कि इसे हम आँखों से देख नहीं पाते क्योंकि उसके दृश्य रूप के लिए हमें चौथे आयाम की आवश्यकता होगी। परन्तु गणितज्ञ लोग, इसे गणित की भाषा में स्पष्ट कर सकते हैं। वे अनुभव, जो हमारी इन्द्रियों से परे हैं, अमूर्त गणित के लिए वे सहज साध्य हैं।

"यह सारा कल्पनाशक्ति का खेल समझो। क्या अन्तरिक्ष में ऐण्ठन पैदा की जा सकती है? इस मुद्दे पर अनेक वैज्ञानिकों ने सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं। पर वे सारे सिद्धान्त, अपरिपक्व हैं और उन्हें मान्यता भी नहीं मिली है। वैसे इस सब की जड़ में एक विचार है कि मूलभूत कणों को उपयोग में लाकर, अन्तरिक्ष में ऐण्ठन निर्माण करने की सम्भावना हो सकती है। किन्हीं विशेष मूलभूत कणों में धुरीय चक्रण (spin)

जैसे कुछ आन्तरिक गुण होते हैं। चक्रण का अर्थ है - हमारे प्रतिदिन के व्यवहार में किसी वस्तु का उसके अक्ष के चारों ओर घूमना। परन्तु मूलभूत कणों के सन्दर्भ में इसका अर्थ भिन्न है। मूलभूत कणों के गणित में, अमूर्त रूप के भिन्न-भिन्न धुरीय चक्रण होते हैं। यदि किसी विशेष धुरीय चक्रण वाले मूलकणों को, बड़े पैमाने पर अवकाश में छोड़ा जाए तब ऐण्ठन यानी घुमाव पैदा किया जा सकता है, ऐसा माना जाता है। परन्तु इसके लिए ज़रूरी है कि इन मूलभूत कणों को, एक ही दिशा में घूमना होगा। यदि उनके धुरीय चक्रण की भिन्न-भिन्न दिशाएँ रहीं तब उनका कोई परिणाम नहीं होगा।

"हमारी प्रयोगशाला में मूलकणों को प्रवाहित करने का एक बहुत बड़ा यंत्र है। अतः उसकी सहायता से इच्छित प्रवाह तैयार करने की मैंने ठान ली। नए प्रयोग की अनुमति के लिए मैं सरकारी फीताशाही की प्रक्रिया में अटकना नहीं चाहता था। क्योंकि मेरे प्रपोज़ल को कई फाइलों में से गुज़रते हुए, नकारात्मक जवाब मुझ तक पहुँचते-पहुँचते मेरे सेवानिवृत्त होने का समय आ गया होता। उन समस्त फाइलवालों के सन्तोष के लिए मैंने अपने प्रयोग को सरकारी काम का एक आवश्यक भाग होने का आभास कराया। उस यंत्र के निकट अपना केबिन बनवा लिया। उस केबिन पर 'टॉप सीक्रेट', 'डेंजरस', 'डू नॉट एंटर' जैसी तख्तियाँ लगाकर सभी की दखलन्दाज़ी से अपने आप को बचा लिया।

"इस तरह मैं इस प्रयोग के लिए अधिक-से-अधिक समय दे पाया। जिस काम को मैंने हाथ में लिया था, वह बहुत ही कठिन था। उस यंत्र से, अपने इच्छित मूलकणों को समग्र रूप से प्राप्त करने के प्रयत्न, मैंने दिन-रात जारी रखे। परिश्रम करते-करते दो वर्ष बीत गए। अन्त में, करीब छः महीने पहले मुझे इस प्रयोग में सफलता मिली।

"प्रयोग के लिए मैंने, अपनी रिस्टवॉच का उपयोग किया। उसके प्रतिबिम्ब में रूपान्तरित होते समय क्या उसकी कालमान पद्धति बदल जाती है, इसे मैं देखना चाहता था। घड़ी को मैंने उचित स्थान पर रखा और उस पर मूलभूत कणों का संवेग प्रवाह डाला। उस प्रवाह में घड़ी को एक विशेष गोल घेरे के मार्ग में घुमाते ही वो प्रतिबिम्ब में परिवर्तित हो गई। उसके कालमान में कोई फर्क नहीं पड़ा। अपने प्रयोग की सफलता को देखने के पश्चात् मैंने प्रवाह को रोक दिया और घड़ी अपने मूल स्वरूप में लौट आई। यानी कि मुझे परिवर्तन को स्थायी रूप देने में सफलता नहीं मिली थी।

"उसी प्रयोग को मैंने भिन्न-भिन्न तरीकों से दोहराया और अन्त में मुझे सफलता मिल ही गई। मूलभूत कणों के प्रवाह में, घड़ी का रूपान्तर हो

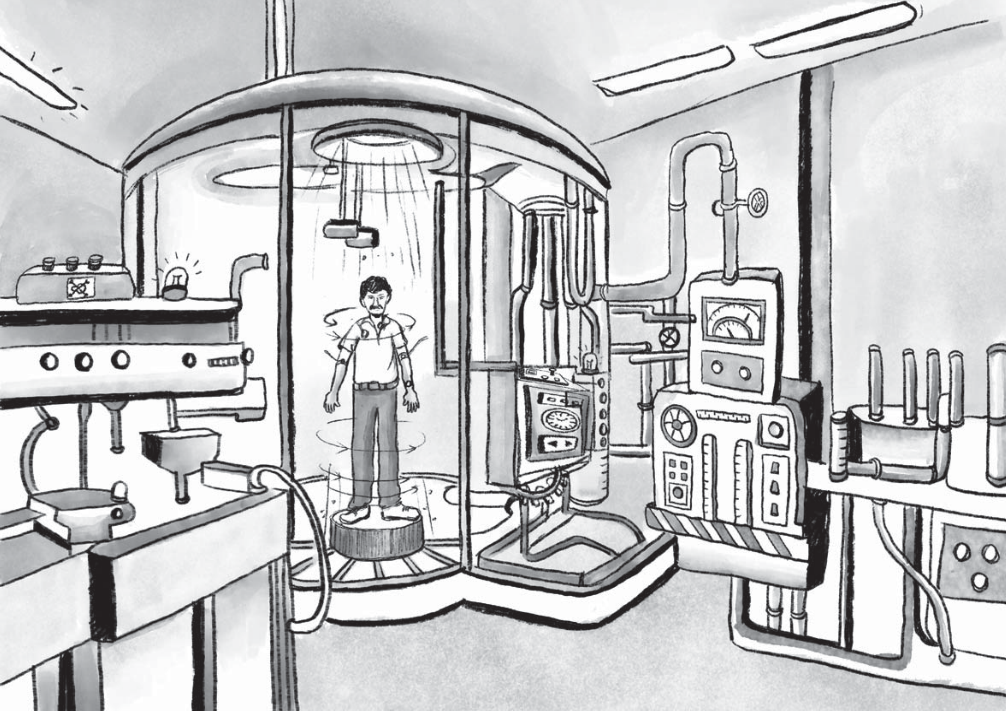

जाने के पश्चात्, प्रवाह बन्द करने से पहले ही यदि घड़ी को बाहर निकाल लिया जाए, तो घड़ी का परिवर्तन स्थायी बना रहता है। यही प्रयोग मैंने भिन्न-भिन्न वस्तुओं पर किया और हर बार मेरा वही अनुभव रहा। हालाँकि, इस परिवर्तन का रहस्य मैं अभी तक सुलझा नहीं पाया हूँ।

“चार दिसम्बर को मैंने उपर्युक्त प्रयोग स्वयं पर करने का निर्णय किया। इससे पहले मैंने कीड़ों, तितलियों, गिनीपिग आदि प्राणियों पर इसका प्रयोग करके देख लिया था और मुझे विश्वास हो गया था कि ऐसा करने में जान को खतरा नहीं है। फिर भी यह सोचकर कि इस प्रयोग में यदि मेरे साथ कोई गहरा हादसा हो जाता है तो अन्य शोधकर्ताओं को मेरे शोधकार्य से लाभ मिले, मैंने अपने प्रयोग की समूची जानकारी लिखकर एक सुरक्षित जगह पर रख दी। और मेरे रूपान्तर होने के पश्चात्, मेरे कमरे में घटने वाली सारी गतिविधियों को वीडियो टेप पर रिकॉर्ड करने की व्यवस्था कर डाली। इसके अलावा विभिन्न यंत्र मेरे शरीर की अलग-अलग प्रक्रियाओं का मापन करने वाले थे ही। इस पूरी तैयारी के बाद मैंने मूलभूत कणों के प्रवाह को चलाया और उसमें प्रवेश कर लिया।

“उस प्रवाह में उचित मार्ग से घेरा पूरा करने पर मेरा परिवर्तन प्रतिबिम्ब में हो गया और प्रयोग के दौरान मुझे बदलाव की कोई अनुभूति भी नहीं

हुई। बगैर किसी वेदना और चक्कर के मेरा रूपान्तर हो गया। मेरे साथ-साथ मेरे धारण किये हुए कपड़े, घड़ी, जूते भी बदल गए! प्रवाह से बाहर निकलकर अपना परीक्षण किया मैंने! अब मैं अक्षरों को पढ़ने में असमर्थ हो गया था क्योंकि मेरे दिमाग में उल्टे अक्षर पढ़ने की जानकारी उपलब्ध थी। मैं बोतल का कॉर्क स्क्रू से खोलने अथवा बन्द करने में गड़बड़ करने लगा, क्योंकि स्क्रू की रचना मेरे दिमाग में तथा वास्तविक रूप में, सर्वथा विपरीत थी। मेरे दाहिने हाथ की कार्य निपुणता, मेरे बाएँ हाथ में आ गई। अपने तमाम अनुभवों को मैंने लिखकर रख लिया। इसके साथ-साथ यंत्र द्वारा मेरे निरीक्षण भी जारी थे।

"कुछ समय पश्चात् मैं फिर 'सीधा' होने के लिए उस प्रवाह में जा खड़ा हुआ और बाहर आने पर पूर्वस्थिति में आ गया। परन्तु, इस प्रयोग का मेरे दिमाग पर गहरा असर पड़ा। मेरी 'उल्टी' अवस्था की सारी स्मृतियाँ नष्ट हो गई थीं। प्रयोग से पहले की मेरी स्मृति बिलकुल ठीक थी परन्तु प्रतिबिम्बित अवस्था में मैंने क्या-क्या किया, मुझे बिलकुल याद नहीं रहा। परन्तु वीडियो टेप रिकॉर्डर में सब कुछ अंकित हो गया था। अतः मैं उसे देख पाया। उसी प्रकार से मैंने अपने अनुभवों को अपनी ही लिखाई में पढ़ा... मात्र उसे पढ़ने के लिए मुझे

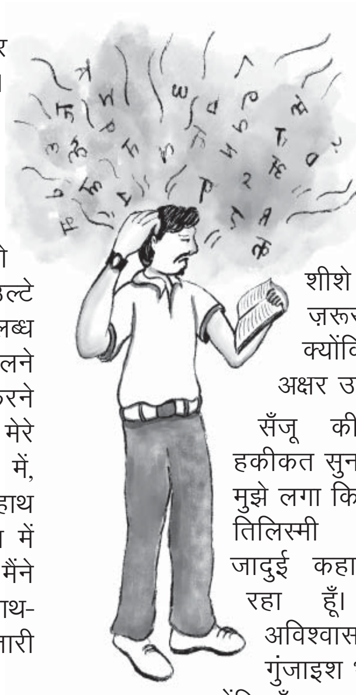

शीशे की ज़रूरत पड़ी क्योंकि वे अक्षर उलटे थे।"

सँजू की सारी हकीकत सुनते समय मुझे लगा कि मैं कोई तिलिस्मी अथवा जादुई कहानी सुन रहा हूँ। परन्तु अविश्वास की गुंजाइश भी न थी क्योंकि सँजू का प्रतिबिम्ब ही मेरे सामने बैठा था। उसकी कहानी चल रही थी। उस दौरान मेरा ध्यान दाहिनी सूँड वाले गणेशजी की ओर गया। मेरे मन में एक विचार उठा...

"रुको सँजू! यह गणपति भी रुपान्तरित ही हैं क्या?" मैंने उससे पूछा।

"हाँ प्रताप! यदि यकीन न हो तो म्यूज़ियम में जाकर देख लो।" सँजू की नज़रों में मज़ाकिया भाव था।

मैं उसे अपने पड़ोस में स्थित म्यूज़ियम की इमारत में ले गया। पेशवाओं के समय की वस्तुओं के

सेक्शन में दौड़कर पहुँचा और देखा कि बाईं सूँड वाले गणेशजी की जगह खाली पड़ी थी। सँजू द्वारा दिए गणेशजी को मैंने वहाँ रख दिया और चुपचाप अपनी स्टडी में लौट आया।

"सॉरी प्रताप, मैंने तुम्हें धोखा दिया है.... यदि चाहो तो मैं गणेशजी की मूर्ति को पूर्ववत कर दूँगा। तुमसे मुलाकात करने से पहले हल्के-से मज़ाक के लिए मैंने ऐसा किया था। मैं पिछले हफ्ते तुम्हारे म्यूज़ियम गया था। वहाँ से चुपचाप वह मूर्ति उठा ले गया और आज तुम्हें भेंट में दे दी।" सँजू ने खुलासा किया।

अब मेरा दिमाग काम करने लगा। प्रमोद रांगणेकर द्वारा किया गया पराक्रम, उसका अपना न होकर, उसके प्रतिबिम्ब का था। तभी वह बाएँ हाथ से कुशलतापूर्वक गेंदबाज़ी कर सका। उसकी इस अनपेक्षित गेंदबाज़ी को इंग्लैंड की टीम खेल न पाई। यह बात मैंने सँजू से कही, तब वह बोला, "बिलकुल ठीक! बीस तारीख की शाम प्रमोद मेरे पास आया था। वह बहुत ही उदास था। उसे चाह थी कि उसका अन्तिम मैच स्मरणीय हो। परन्तु उसकी बॉलिंग सही नहीं जा रही थी। प्रभाव कम हो गया था। प्रतिस्पर्धी उस बॉलिंग के अभ्यस्त हो गए थे। दूसरे दिन उसे बॉलिंग करनी थी और उसके मन में यह डर समाया था कि यदि वह असफल होता है तो आलोचक उसे बख्शेंगे नहीं। उससे बातचीत करते हुए मेरे मन में एक अनोखी कल्पना आई। यदि उसका रूपान्तर प्रतिबिम्ब में कर दूँ, तो? अर्थात्.......परन्तु मैं उसे यह रहस्य कदापि नहीं बता सकता था।

"मैंने उसे कॉफी में नींद की दवाई पिला दी। उसके निद्राधीन हो जाने के पश्चात् अपनी कार से उसे अपनी प्रयोगशाला में ले गया। किसी 'टॉप सीक्रेट' प्रयोगशाला में बाहरी आदमी को ले जाना, नियमों के खिलाफ है। परन्तु, नियमों से बच निकलने की मेरी चतुराई काम आ गई। मैंने प्रमोद को अन्दर ले जाकर, उसका रूपान्तर प्रतिबिम्ब में किया, और उसे घर छोड़ आया।

"दूसरे दिन उसका फोन आया कि वह हिस्टेरिकल अनुभव कर रहा है और उसका दाहिना हाथ बहुत कमज़ोर हो गया है। पढ़ते समय उसे अक्षर उल्टे दिखाई दे रहे हैं आदि-आदि...। फिर उसने पूछा कि क्या पिछली रात मैंने उसे कोई भयंकर

दवा पिला दी थी? मैं उसके घर पहुँचा और उसे समझाया कि वह फिक्र न करे! यदि दाहिना हाथ कमज़ोरी महसूस कर रहा है तो...तो वह बाएँ हाथ से गेंदबाज़ी करे। उसे लगा कि मैं मज़ाक कर रहा हूँ परन्तु थोड़ी-सी नेट प्रेक्टिस के बाद उसे मेरी बात पर यकीन हो गया....और तुम तो जानते ही हो कि फिर क्या हुआ।

"मैच के पश्चात् उसे मैं ही ले गया था। मैंने शहर से बाहर एक छोटी-सी कॉटेज में उसे छः दिनों तक रखा। उसके मन एवं शरीर पर गहरा बोझ-सा पड़ गया था। पुलिस तथा अखबार वालों को मैंने ही फोन किया था। सातवें दिन जब वह कुछ नॉर्मल हुआ तब दोबारा उसका रूपान्तर कर मैं उसे शहर ले आया। परन्तु, पिछले हफ्ते की कोई भी बात उसकी स्मृति में नहीं थी।"

प्रमोद की अभूतपूर्व बॉलिंग का खुलासा हो जाने पर मुझे और भी छोटी-छोटी बातों का स्पष्टीकरण मिलता चला गया। अपने बाएँ हाथ के करतब को छिपाने के उद्देश्य से ही सँजू ने हमारे यहाँ काँटा-छुरी से खाना खाया। उसे खाने में काफी समय भी लग रहा था। उसने अरुण की पुस्तक पर हस्ताक्षर भी नहीं किए। आईने में दिखने वाले अक्षरों को, उसी ढंग से लिखना कितना कठिन है, इसका अनुमान हम लगा ही सकते हैं।

"सँजू, तुम अपनी इस अनूठी खोज को तत्परता से प्रकाशित करवाओ... देखो, तुम 'नोबेल प्राइज़' से ज़रूर नवाज़े जाओगे।" मैंने सलाह दी।

"नहीं प्रताप! ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि मेरा यह अनुसन्धान अभी भी परिपूर्ण नहीं है। प्रतिबिम्बित अवस्था में होने वाला विस्मरण... उससे उबरने के उपाय, इसका कोई हल नहीं ढूँढ पाया हूँ मैं! जब यह गुत्थी सुलझेगी तभी चैन की साँस ले सकूँगा मैं... आज तुम्हारे पास आया... इतना लम्बा भाषण दिया... पता नहीं यह सारा भी मुझे याद रह पाएगा अथवा नहीं। मुझे अपनी इस खोज की अपूर्णता को पूरा करना है!" सँजू के अन्दर छिपा एक परफेक्शनिस्ट बोल रहा था। "उस प्रयोग के लिए मुझे एक दुर्लभ वस्तु चाहिए... उसी की खोज में हूँ मैं..."

"ठीक है। परन्तु मेरी एक व्यावहारिक सलाह मानोगे?... तुम जिस अज्ञात शक्ति से जूझ रहे हो, उसमें तुम्हारे साथ घोर हादसा होने की आशंका है। कम-से-कम उसका आज तक का समूचा विवरण लिखकर सुरक्षित स्थान पर रख दो, ताकि तुम्हारी खोज का श्रेय तुम्हें ही मिले।" मैंने बड़ी आस्था से कहा।

"न तो मैं दुनिया से श्रेय की अपेक्षा रखता हूँ और न ही नोबेल प्राइज़ की। मेरी अपेक्षाएँ भिन्न हैं और उसमें मैं तुम्हारी मदद चाहता हूँ। तुम्हारे कहे अनुसार मैंने अपने समस्त प्रयोगों

का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिख रखा है। उस स्थान को सिर्फ मैं ही जानता हूँ। उस विवरण को पढ़कर कोई भी जानकार व्यक्ति अपने आप को प्रतिबिम्ब में रूपान्तरित कर सकता है। इतना तो तुम समझ ही गए होगे कि यह 'पुष्पक विमान इफेक्ट' नहीं है!" सँजू ने हँसते हुए कहा।

'पुष्पक विमान इफेक्ट' मुहावरा हमारी पुराने दिनों की चर्चा की याद दिलाता है। बहुत साल पहले हम चर्चा कर रहे थे तब मैंने कहा था कि हमारे पूर्वज बहुत पढ़े-लिखे थे। विज्ञान में उन्होंने खूब प्रगति की थी, ऐसा पुराणों में लिखा है। मेरे इस कथन को खारिज करते हुए सँजू ने कहा था कि पुष्पक विमान यानी 'हेलीकॉप्टर', घटोत्कच को मार गिराने वाली, इन्द्रदेव की दी हुई शक्ति का मतलब है 'गाइडिड मिसाइल' जो बड़ी दूर तक संहार कर सकती थी... इस प्रकार के उदाहरण किसी वैज्ञानिक के लिए काफी नहीं हैं। जब तक इन सभी वस्तुओं को निर्मित करने की शास्त्रीय जानकारी, पुराण ग्रन्थों में नहीं पाई जाती, तब तक यह सब कुछ विज्ञान की दृष्टि में, 'कविकल्पना' से अधिक कुछ नहीं है। सँजू के इन मुद्दों का जवाब आज भी मेरे पास नहीं है।

"मैं क्या मदद कर सकता हूँ, बताओ!" मैंने पूछा क्योंकि मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मेरे ज्ञान एवं अनुभव का इस खोज से क्या सम्बन्ध हो सकता है। तब सँजू ने कहा, "तुम एक बहुत बड़े एवं प्रतिष्ठित म्यूज़ियम के क्यूरेटर हो। मेरे परिवर्तित किए गणेशजी को देखकर तुम धोखा खा गए। तुम्हें वह दुर्लभ खोज-सा लगा। तो इसी प्रकार की अनेक दुर्लभ एवं अमूल्य वस्तुओं को बनाकर दुनिया से रुपया वसूलने का इरादा है मेरा। यदि एकाध स्टैंप उलटा छप जाता है तो वह भी अत्यन्त दुर्लभ माना जाता है। उसका मूल्य एकदम से बढ़ जाता है। तुम्हारे पास प्राइवेट कलेक्टर्स की ओर से ऐसी दुर्लभ वस्तुओं के बारे में ज़रूर पूछा जाता होगा। मेरे द्वारा तैयार की गई कृतियों को अपनी अथॉरिटी पर तुम सहज रूप से बेच सकते हो। मिलने वाले रुपयों में तुम्हारी और मेरी साझेदारी होगी।"

मुझे सँजू का प्रस्ताव बिलकुल भी पसन्द नहीं आया। उसके अनुसार पुरातन एवं दुर्लभ वस्तुओं के बदले, बहुत सारा पैसा कमाया जा सकता है। उसके द्वारा तैयार किए गए, दुर्लभ एवं विशेष कृतियों के प्रतिबिम्ब, ऐसी वस्तुओं का संग्रह करने वाले लोगों को बेचना मेरे लिए असम्भव न था परन्तु मुझे यह कार्य और व्यवहार नीति-विरोधी लगा। ऐसा करना मेरे पद एवं अनुभव का दुरुपयोग ही होता।

मैंने सँजू से काफी बहस की। उसे इस मार्ग से विमुख करने का भी बहुत प्रयास किया। परन्तु, किसी बात को ठान लेने पर किसी भी कीमत पर

उससे हटना, सँजू को कभी भी मंजूर न था। बचपन से यह आदत थी उसकी।

“ठीक है प्रताप! तुम्हें नीति के मार्ग पर चलना है तब खुशी से जाओ उस राह, परन्तु मुझे उपदेश मत दो। कम -से-कम मेरे रहस्य को तो गुप्त रख सकोगे न तुम?” अन्त में उसने पूछा।

“तुम्हारी कहानी को मैं पूर्णतया भूल जाऊँगा। विश्वास रखो कि मैं किसी के सामने इस राज़ को नहीं खोलूँगा। ...तुम चिन्ता मत करना।” और सँजू चला गया।

* * *

कुछ दिनों पश्चात् डिफेंस की प्रयोगशाला में एक बहुत बड़ी चोरी हो गई। एक अत्यन्त दुर्लभ धातु वहाँ की तिजोरी में से गायब हो गई। सेफ के कॉम्बीनेशन की जानकारी बहुत ही कम लोगों को थी। खास बात तो यह कि चोर ने अपनी उँगलियों के निशान सेफ पर छोड़ रखे थे।

पुलिस का अन्दाज़ा था कि चोरी करने वाला महकमे का कोई वैज्ञानिक

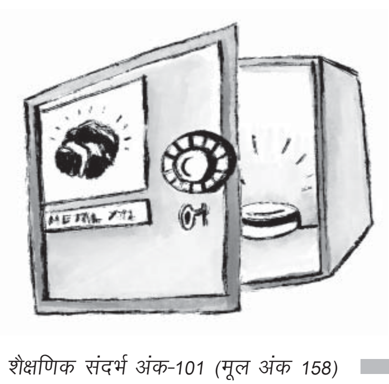

ही है, क्योंकि जिस धातु की चोरी हुई थी, उससे सामान्य जनों को कुछ फायदा न था। सेफ का कॉम्बीनेशन भी गुप्त ही था। सेफ पर पाए गए उँगलियों के निशान, वहाँ के किसी भी वैज्ञानिक की उँगलियों के निशान से मेल नहीं खा रहे थे। सेफ बनाने वालों का ऐसा दावा था कि कोई भी सामान्य व्यक्ति उसे खोल ही नहीं सकता।

पर मेरी आशंका कुछ और ही थी। मुझे सँजू पर शक हो रहा था। उसने एक बार कहा था कि वह अपने प्रयोग के लिए किसी विशेष एवं दुर्लभ वस्तु की खोज में है। उँगलियों के निशान जानबूझकर छोड़ने में उसकी विकृत विनोद बुद्धि ही दिखाई दे रही थी। पुलिस के दिमाग में, उन निशानों को शीशे में देखने का विचार आ ही कैसे सकता है!

इस घटना के कुछ दिन बाद अखबार की हेड लाइन पढ़कर, मैं सकते में आ गया। पहले पेज पर मोटे अक्षरों में छापा था- ‘डिफेन्स लैबोरेटरी’ में दुर्घटना। वैज्ञानिक की हालत गम्भीर एवं चिन्ताजनक।

किसी कारणवश उस वैज्ञानिक का नाम गुप्त रखा जा रहा था। पर, मुझे बार-बार ऐसा लग रहा था कि वह वैज्ञानिक सँजू ही है।

मैंने जान-पहचान और सिफारिश लगाकर गहरी खोजबीन की तो पाया कि मेरी आशंका सही है।

सँजू के प्रयोग करते समय एक भारी विस्फोट हुआ और समूची सामग्री टूट-फूट कर तहस-नहस हो गई। सँजू का भाग्य अच्छा था कि विस्फोट की मुख्य मार से वह बच गया। फिर भी करीब एक महीने वह बेहोश पड़ा था।

"सँजू मेरा निकट का दोस्त है और विस्फोट के कुछ दिनों पहले वह मेरे घर खाना खाने आया था," मेरे इस कथन के कारण उसके डॉक्टर ने मुझे बुलवा लिया, क्योंकि विस्फोट से पहले कई दिनों तक सँजू से किसी की बात ही नहीं हुई थी। उससे सम्पर्क वाला कोई भी व्यक्ति मिल नहीं पाया था। वह बिलकुल एकान्त जीवन जी रहा था। अपनी प्रयोगशाला के सहयोगियों से वह बात ही नहीं करता था। सँजू के होश में आने की सम्भावना थी, अतः डॉक्टर चाहते थे कि उस समय मैं वहाँ उपस्थित रहूँ।

परन्तु होश में आने पर सँजू ने मुझे नहीं पहचाना। इसका कारण भी जल्द ही स्पष्ट हो गया। सँजू का स्मृति-पटल पूर्णतया धुल गया था।

अपने प्रयोग को सफल बनाने के लिए, पता नहीं उसने कौन-सा साहस किया होगा। प्रतिबिम्ब से मूल रूप में आने पर अपनी स्मरण शक्ति बनाए रखने के उद्देश्य को पूरा करने के चक्कर में, उसकी समूची स्मरणशक्ति

ही नष्ट हो गई थी। उसका भाग्य अच्छा था जो वह खुद मूल रूप में लौट आया और सकुशल है। उसका दिमाग अन्य सब बातों और पहलुओं में ठीक ही काम कर रहा है परन्तु आज वह खुद ही नहीं जानता कि उसकी खोज कितनी महान और अमूल्य है। अपने प्रयोग की लिखित जानकारी को उसने, पता नहीं किस 'सुरक्षित' जगह पर छुपाकर रखा है। वह मिलने तक, मुझे बताया गया समस्त किस्सा किसी को भी अविश्वसनीय ही प्रतीत होगा।

दुनिया की बात छोड़ें, मुझे खुद यह तमाम दास्तान किसी स्वप्न जैसी लगती है। क्या प्रमोद की गेंदबाज़ी की जड़ में ऐसी अनहोनी घटना वाकई घटित हुई थी? क्या मैंने सँजू को वाकई प्रतिबिम्बित अवस्था में देखा था?

मन में जब कभी आशंकाओं का तूफान उमड़ पड़ता है तब मैं खुद म्यूज़ियम में जाकर अपने आप को सन्तुष्ट कर लेता हूँ क्योंकि वहाँ एक आले में इस सारी घटना के साक्षात् साक्षी विराजमान हैं....।

जयंत विष्णु नारलीकर (1938-2025): प्रबुद्ध वैज्ञानिक और विज्ञान कथाकार। कैंब्रिज से गणित में डिग्रियाँ हासिल करने के बाद उन्होंने खगोल-विद्या और खगोल-भौतिकी में विशेष प्रावीण्य प्राप्त किया। किंग्ज़ कॉलेज के फेलो और इंस्टिट्यूट ऑफ थिओरेटिकल एस्ट्रोनॉमी के संस्थापक सदस्य के रूप में कुछ समय कैंब्रिज में रहे। IUCAA (Inter-University Centre for Astronomy and Astrophysics), पुणे के संस्थापक सदस्य। 'पद्मभूषण' और 'पद्मविभूषण' सहित कई राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

इस अंक के प्रकाशन के दौरान ही जयंत विष्णु नारलीकर के निधन की दुखद खबर आई। यह अंक उनकी याद और कहानियों को समर्पित।

सभी चित्र: श्रेया टी.एस.: एनिमेटर और इलस्ट्रेटर हैं। कम्यूनिकेशन डिज़ाइन में विशेषज्ञता के साथ एनआईडी से स्नातक किया है। बच्चों की कहानी की किताबों और कॉमिक्स पर काम करना बेहद पसन्द है। इन्हें अपने बचपन की कहानियों और अपने दैनिक जीवन में देखी जाने वाली कहानियों से प्रेरणा मिलती है।

यह कहानी सन् 2013 में *विज्ञान प्रसार* द्वारा प्रकाशित जयंत विष्णु नारलीकर के विज्ञान कथाओं के संकलन *कृष्ण विवर और अन्य विज्ञान कथाएँ* से साभार।